

मूक पात्रिका

निष्पक्ष, निर्भीक, स्वतंत्र आवाज...

वर्ष - 03 अंक - 05 बेमेतरा, मंगलवार 18 अगस्त 2026 रायपुर एवं बेमेतरा से प्रकाशित कुल पेज - 08 मूल्य - 1 रुपये डाक पंजीयन- दुर्ग/1743290201/2025-27

सीएम साय ने अपने खेत में बैलों के साथ उतरकर चलाया हल

जशपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का अपनी माटी और खेती-किसानी से गहरा जुड़ाव आज एक बार फिर देखने को मिला। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आज सुबह जशपुर जिले के अपने गृहग्राम बगिया में खेत पहुंचे और पारंपरिक रूप से बैलों की जोड़ी के साथ हल चलाकर बियासी की। खेत में उतरकर हल की मूठ थामे मुख्यमंत्री साय सहज ही एक किसान की भूमिका में नजर आए। इस दौरान उन्होंने खेती-किसानी से जुड़ी अपनी पुरानी स्मृतियों को भी साझा किया।

मुख्यमंत्री साय ने हरे-भरे खेत में मिट्टी की सौंधी सुगंध और बैलों के साथ खेती करते हुए कहा कि अपने गांव, अपनी माटी और अपने खेत से जुड़ाव का सुख ही अलग है। हल की मूठ थामते ही खेती-किसानी से जुड़ी पुरानी स्मृतियां एक बार फिर जीवंत हो उठती हैं। खेतों के बीच बिताया समय मन को असीम सुकून देने के साथ नई ऊर्जा से भर देता है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि वे स्वयं किसान परिवार से आते हैं और बचपन से खेती-किसानी को बहुत करीब से देखा और अनुभव किया है। खेती उनके लिए केवल आजीविका का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन का संस्कार है। गांव और खेतों ने ही उन्हें श्रम का सम्मान करना, प्रकृति के साथ



सामंजस्य बनाकर चलना और अपनी जड़ों से जुड़े रहना सिखाया है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की पहचान यहां की माटी, मेहनतकश किसानों और समृद्ध कृषि परंपराओं से जुड़ी हुई है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में खेती का महत्वपूर्ण स्थान है। पीढ़ियों से हमारे किसान अपने परिश्रम से धरती को सौंचते हुए प्रदेश की समृद्धि की नींव मजबूत करते आए हैं। छत्तीसगढ़ की तीज-त्योहार, परंपराएं और ग्रामीण जीवन

भी कृषि से गहराई से जुड़े हुए हैं। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि आधुनिकता के इस दौर में भी अपनी परंपराओं और जड़ों से जुड़ाव बनाए रखना महत्वपूर्ण है। खेती हमें परंपराओं से जुड़ी हुई है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में खेती का महत्वपूर्ण स्थान है। पीढ़ियों से हमारे किसान अपने परिश्रम से धरती को सौंचते हुए प्रदेश की समृद्धि की नींव मजबूत करते आए हैं। छत्तीसगढ़ की तीज-त्योहार, परंपराएं और ग्रामीण जीवन

मेहनतकश अन्नदाता किसान सदैव उनके हृदय के सबसे करीब हैं। किसानों की खुशहाली और कृषि की समृद्धि ही प्रदेश की समृद्धि का मजबूत आधार है। मुख्यमंत्री ने प्रदेश के अन्नदाता किसानों के परिश्रम को नमन करते हुए उनके जीवन में खुशहाली तथा खेतों में भरपूर फसल की कामना की। खेती से मुख्यमंत्री का रहा है पुराना नाता मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का जीवन ग्रामीण परिवेश और खेती-किसानी से गहराई से जुड़ा रहा है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन की तिरंगा फहराने वाली तस्वीर से छेड़छाड़, कांग्रेस आईटी सेल नेता पर मामला दर्ज

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन की स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगा फहराते हुए तस्वीर से कथित छेड़छाड़ कर सोशल मीडिया पर प्रसारित करने के मामले में छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के सिविल लाइंस थाने में कांग्रेस आईटी सेल से जुड़े नेता अरुण साहू के खिलाफ बीती देर रात प्राथमिकी दर्ज की गई है।

पुलिस से आज सुबह मिली जानकारी के अनुसार भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता गौरीशंकर श्रीवास ने इस संबंध में सिविल लाइंस थाने में लिखित शिकायत दी थी। शिकायत में कहा गया है कि 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने अपने निवास पर तिरंगा फहराया था। आरोप है कि अरुण



साहू ने इससे संबंधित तस्वीर को एडिट कर सोशल मीडिया पर प्रसारित किया, जिससे लोगों के बीच भ्रामक संदेश फैल सके। शिकायतकर्ता ने पुलिस को संबंधित सोशल मीडिया पोस्ट के स्क्रीनशॉट और अन्य जरूरी दस्तावेज भी उपलब्ध कराए हैं। शिकायत के मुताबिक संबंधित पोस्ट को बाद में सोशल मीडिया से हटा लिया गया, लेकिन इससे

पहले वह काफी वायरल हो चुकी थी। पुलिस ने शिकायत के आधार पर अरुण साहू के खिलाफ एफआईआर क्रमांक 0429/2026 दर्ज की है। आरोपी के खिलाफ राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971 की धारा 2 और भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 356 के तहत अपराध दर्ज किया गया है।

तीसरी सोमवारी पर लखीसराय में भगदड़ सात महिला श्रद्धालुओं की मौत, 18 घायल

लखीसराय। बिहार के लखीसराय जिले में अशोकधाम मंदिर परिसर के समीप तीसरी सोमवारी के अवसर पर आज सुबह भगदड़ मच जाने से सात महिला श्रद्धालुओं की मौत हो गयी तथा 18 से अधिक लोग घायल हो गये। पुलिस सूत्रों ने बताया कि घटना अशोकधाम मंदिर परिसर से करीब 400 मीटर पश्चिम और अशोकधाम रेलवे स्टेशन से लगभग 100 मीटर की दूरी पर हुई। मंदिर में प्रवेश के लिए श्रद्धालुओं के पंक्तिबद्ध होने के दौरान धक्का-मुक्की शुरू हो गयी।

लातेहार हादसा: मौत के मलबे में अपनों को तलाशते लोगों के बीच पहुंचे सांसद बैद्यनाथ राम, दर्द देख नम हुई आंखें

डेढ़तंगवा घाटी में राहत-बचाव कार्य का लिया जायजा

लातेहार। झारखंड के लातेहार जिले डेढ़तंगवा घाटी में हुए हृदयविदारक सड़क हादसे ने हर किसी को झकझोर कर रख दिया। सड़क पर बिखरा मलबा, क्षतिग्रस्त वाहन और अपनों को खोने के बाद बिलखते स्वजन... शनिवार की शाम का यह मंजर किसी को भी भीतर तक हिला देने वाला था। हादसे की सूचना मिलते ही राज्यसभा सांसद बैद्यनाथ राम



अपनी टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। मौत के मलबे के बीच अपनों को तलाशते लोगों का दर्द उन्होंने करीब से देखा तो माहौल

और भी भावुक हो गया। सांसद ने घटनास्थल पर चल रहे राहत एवं बचाव कार्य का जायजा लिया। पुलिस, प्रशासन और ग्रामीणों से घटना की जानकारी ली। उन्होंने बचाव कार्य में जुटे लोगों से बात कर आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराने की स्थिति भी जानी। हादसे की भयावहता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता था कि क्षतिग्रस्त आटो को हटाने और उसमें फंसे शवों को निकालने में बचाव दल को काफी मशकत करनी पड़ रही थी। घटनास्थल के

बाद सांसद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चंदवा पहुंचे। अस्पताल में हादसे से प्रभावित लोगों और मौजूद ग्रामीणों से घटना की जानकारी ली। यहां पीड़ित परिवारों के स्वजनों से मुलाकात कर उन्हें ढांडस बंधाया। अपनों को खोने का दर्द शब्दों में बयां नहीं हो रहा था। किसी की आंखों में आंसू थे तो किसी की जुबान पर सिर्फ एक सवाल आखिर यह कैसे हो गया। बैद्यनाथ राम ने पीड़ित परिवारों को हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया।

नागपंचमी पर नागचंद्रेश्वर मंदिर में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

उज्जैन। मध्यप्रदेश की धार्मिक नगरी उज्जैन में नागपंचमी पर्व पर वर्ष में केवल एक बार 24 घंटे के लिए खुलने वाले भगवान नागचंद्रेश्वर मंदिर में श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। आज सोमवार प्रातः 10 बजे तक 5 लाख 29 हजार 306 श्रद्धालु भगवान श्री नागचंद्रेश्वर के दर्शन कर चुके थे। विश्व प्रसिद्ध भगवान महाकालेश्वर मंदिर के द्वितीय तल पर स्थित भगवान श्री नागचंद्रेश्वर मंदिर के दर्शन के लिए देशभर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु उज्जैन पहुंचे हैं। मंदिर वर्ष में केवल एक बार नागपंचमी पर 24 घंटे के लिए खुलता है, जिसके कारण श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह है।

श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति की विज्ञप्ति के अनुसार श्रद्धालुओं की सुविधा,

सुरक्षा एवं सुगम दर्शन के लिए जिला प्रशासन और मंदिर समिति द्वारा व्यापक व्यवस्थाएं की गई हैं। दर्शन मार्ग पर भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा, पेयजल, चिकित्सा सहित अन्य आवश्यक सुविधाओं की निरंतर निगरानी की जा रही है।

मंदिर समिति के सूत्रों के अनुसार नागपंचमी पर बीती मध्यरात्रि 12 बजे शुभ मुहूर्त में भगवान श्री नागचंद्रेश्वर मंदिर के पट खोले गए। पट खुलने के बाद श्री पंचायती महानिर्वाणी अखाड़े के महंत विनीत गिरी महाराज ने वैदिक मंत्रोच्चार एवं विधि-विधान से भगवान श्री नागचंद्रेश्वर का पूजन-अर्चन किया। पूजन-अभिषेक के बाद आम श्रद्धालुओं के लिए मंदिर के पट खोल दिए गए। भगवान श्री नागचंद्रेश्वर के दर्शन 17 अगस्त की मध्यरात्रि 12 बजे तक जारी रहेंगे,

इसके बाद मंदिर के पट बंद कर दिए जाएंगे। पूजन के दौरान भगवान श्री नागचंद्रेश्वर की प्राचीन प्रतिमा एवं शिवलिंग का अभिषेक कर विधिवत पूजा की गई। इस अवसर पर संभाग आयुक्त आशीष सिंह, अध्यक्ष एवं कलेक्टर रोशन कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक प्रदीप शर्मा, प्रशासक एवं अपर कलेक्टर प्रथम कौशिक सहित मंदिर प्रबंध समिति के अधिकारी एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि भगवान श्री नागचंद्रेश्वर की अद्भुत प्रतिमा नागों की धार्मिक एवं आध्यात्मिक परंपरा का विशेष प्रतीक मानी जाती है। नागपंचमी पर्व को देखते हुए श्रद्धालुओं की सुविधा, सुगम दर्शन एवं सुरक्षा के लिए व्यापक व्यवस्थाएं की गई हैं।

राहुल ने छात्रों की समस्याएं सुनने का आग्रह करते हुए सोरेन को लिखा पत्र

नयी दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने झारखंड में भर्ती परीक्षाओं में अनियमितताओं के खिलाफ आंदोलन कर रहे छात्रों के समर्थन में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को पत्र लिखा है।

उन्होंने सोरेन से आंदोलनरत छात्रों के प्रतिनिधियों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनने और उनके समाधान के लिए उचित कदम उठाने का आग्रह किया है। गांधी ने अपने पत्र में कहा है कि झारखंड



के छात्र राज्य की भर्ती परीक्षाओं में अनियमितताओं के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। उनका आंदोलन शांतिपूर्ण है और उनकी मांगें जायज हैं। राज्य सरकार ने

मुख्यमंत्री द्वारा गठित समिति के माध्यम से छात्रों से संवाद शुरू किया है और कई मांगों पर सहमति भी बनी है। इसके बावजूद आंदोलन जारी है और कुछ छात्र अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर हैं।

कांग्रेस नेता ने कहा, 'मैं सुझाव देना चाहता हूं कि आप व्यक्तिगत रूप से प्रदर्शन कर रहे छात्रों के प्रतिनिधियों से मुलाकात करें।' इससे उनकी शेष चिंताओं के समाधान के लिए सरकार की प्रतिबद्धता और मजबूत होगी।'

युवाओं पर टिप्पणी को लेकर प्रधानमंत्री माफी मांगें : बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर युवाओं के आंदोलनों को नक्सल विचारधारा से जोड़ने का आरोप लगाते हुए सोमवार को कहा कि युवा और छत्र देश का भविष्य हैं तथा उन्हें कथित तौर पर 'दिमागी नक्सली' बनाने के लिए प्रधानमंत्री और भाजपा को देश के युवाओं से माफी मांगनी चाहिए। बैज ने यहां जारी बयान में आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी का स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से दिया गया संबोधन निराशाजनक रहा और उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से युवाओं के आंदोलन को नक्सल विचारधारा से जोड़कर युवा पीढ़ी का अपमान किया। उन्होंने कहा कि देश के युवा बेहतर भविष्य, रोजगार और निष्पक्ष परीक्षा प्रणाली की मांग कर रहे हैं तथा अपनी मांगों को लेकर लोकतांत्रिक तरीके से आवाज उठाना उनका संवैधानिक अधिकार है।



धर्मांतरण के बजाय शिक्षा, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था की मजबूती पर हो ध्यान : रामदेव

रायपुर। योग गुरु बाबा रामदेव ने धर्मांतरण और धार्मिक भेदभाव से जुड़े मुद्दों पर कहा है कि सनातन संस्कृति और धर्म अत्यंत प्राचीन है और इसमें ऐसी कोई कमी नहीं है, जिसके कारण किसी को मुस्लिम या ईसाई बनने की आवश्यकता पड़े। उन्होंने धार्मिक विवादों से ऊपर उठकर शिक्षा, चिकित्सा, कृषि और अर्थव्यवस्था को मजबूत करने पर जोर देते हुए कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य के लिए इन व्यवस्थाओं का उन्नत होना आवश्यक है। बाबा रामदेव ने आज राजधानी रायपुर में पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि सनातन धर्म में कुछ ऐसे लोग जरूर हैं, जिनकी सोच में ऊंच-नीच और भेदभाव है, लेकिन इसे सनातन धर्म की कमी नहीं माना जा सकता। लोगों को अपने जीवन में धर्म को धारण करना चाहिए। भगवान राम, कृष्ण, हनुमान और शिव के आदर्शों को जीवन में उतारने से धर्मांतरण का सवाल ही नहीं उठेगा। उन्होंने धर्मांतरण के मुद्दे पर



है। उनके मुताबिक, इस्लाम और ईसाइयत में भी कर्मियां हैं, लेकिन सनातन धर्म श्रेष्ठ है। बाबा रामदेव ने कहा कि सत्ता तंत्र को धर्म तंत्र को मजबूत बनाने में सहयोग करना चाहिए, ताकि किसी तरह का षड्यंत्र न हो। उन्होंने धर्म, शिक्षा, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था और कृषि व्यवस्था को बेहतर बनाने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि इन क्षेत्रों में किसी तरह की गड़बड़ी नहीं होनी चाहिए और व्यवस्थाओं को लगातार उन्नत बनाने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

कहा कि इतिहास में कुछ मुगल आए और लूटकर चले गए। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ लोगों ने अपने ही सनातनी भाइयों को लालच, तलवार, चमत्कार और भ्रांतियां फैलाकर धर्म बदलने के लिए मजबूर किया। ईसाई धर्म में भी लोगों का धर्म परिवर्तन कराया गया, लेकिन समाज चुप रहा। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म में कोई न्यूनता या अल्पता नहीं है।

उल्ची फ्रीडम शील्ड अभ्यास 17 से 27 अगस्त तक ट्रंप ने अमेरिका-दक्षिण कोरिया सैन्य अभ्यासों में 'बड़ी कटौती' का किया एलान

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दक्षिण कोरिया के साथ होने वाले संयुक्त सैन्य अभ्यासों में बड़ी कटौती करने की घोषणा की है। उन्होंने इसके लिए उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन के साथ अपने बहुत अच्छे संबंध और दक्षिण कोरिया के अमेरिका के ईरान को परमाणु निरस्त्रीकरण करने के प्रयासों में शामिल होने से इनकार को वजह बताया।

यह घोषणा वार्षिक अमेरिका-दक्षिण कोरिया सैन्य अभ्यास शुरू होने से कुछ घंटे पहले की गई। हालांकि, दक्षिण कोरिया ने कहा कि अभ्यास निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार जारी रहेंगे। उल्ची फ्रीडम



शील्ड अभ्यास 17 से 27 अगस्त तक होने हैं और इनमें करीब 18,000 दक्षिण कोरियाई सैनिक हिस्सा ले रहे हैं। राष्ट्रपति ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया मंच 'ट्रूथ सोशल' पर

कहा कि वह दक्षिण कोरिया के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यासों से खुश नहीं हैं। उन्होंने कहा कि ये अभ्यास महंगे हैं और अमेरिका इनकी लागत का बड़ा हिस्सा वहन करता है। उन्होंने रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ

को अभ्यासों में बड़ी कटौती करने का निर्देश दिया है। उन्होंने दक्षिण कोरिया के ईरान संबंधी अमेरिकी प्रयासों में शामिल होने से इनकार की भी आलोचना की। ट्रंप ने कहा कि उन्होंने दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति से ईरान के परमाणु निरस्त्रीकरण के प्रयास में शामिल होने को कहा था, लेकिन सियोल ने इससे इनकार कर दिया। दक्षिण कोरिया के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि सैन्य अभ्यास पहले से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार होंगे। इन अभ्यासों का उद्देश्य संभावित उत्तर कोरियाई आक्रामकता से निपटने के लिए दोनों देशों की सैन्य तैयारियों को मजबूत करना है। उत्तर कोरिया

ने इन अभ्यासों की निंदा करते हुए इन्हें आक्रामक युद्ध की तैयारी बताया है और जवाबी कार्रवाई की धमकी दी है। प्योंगयांग ने हाल में बैलिस्टिक मिसाइल परीक्षण भी किए हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति की घोषणा किम जोंग उन के साथ उनकी कूटनीतिक नजदीकी के बीच हुई है। ट्रंप और किम ने उनके पहले कार्यकाल में कई उच्चस्तरीय बैठकें की थीं लेकिन उत्तर कोरिया के परमाणु निरस्त्रीकरण को लेकर वार्ता 2019 में टूट गई थी। जून 2019 में ट्रंप सैन्य सीमांकन रेखा पार कर उत्तर कोरिया में प्रवेश करने वाले पहले मौजूदा अमेरिकी राष्ट्रपति बने थे।

नौसेना को 1943 करोड़ में अमेरिका से ढाई साल के पट्टे पर मिलेंगे दो अत्याधुनिक समुद्री निगरानी ड्रोन

नयी दिल्ली। भारत ने समुद्री क्षेत्र विशेष रूप से हिन्द महासागर में निगरानी व्यवस्था को पुख्ता बनाने के लिए नौसेना के लिए 1943 करोड़ रुपये की लागत से अमेरिकी कर्पनी से ढाई साल के लिए दो अत्याधुनिक ड्रोन प्रणाली लीज यानी पट्टे पर लेने के अनुबंध पर हस्ताक्षर किये हैं। रक्षा मंत्रालय ने सोमवार को बताया कि उसने नौसेना के लिए 30 महीने की अवधि के लिए दो एम क्यू-9बी 'सी गार्डियन हार्ड-एलटीट्यूड लॉन्ग-एंड्यूरेंस' (एच ए एलई) रिमोटली पायलटेड एयरक्राफ्ट सिस्टम्स (आरपीएस) को पट्टे पर लेने के लिए जनरल एटॉमिक्स एयरोनॉटिकल सिस्टम्स, इंक के साथ



एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके लिए दोनों के बीच करीब 1,943 करोड़ रुपये का अनुबंध हुआ है। इस अनुबंध पर रक्षा मंत्रालय में रक्षा विभाग के अपर सचिव एवं महानिदेशक (अधिग्रहण), ए. अनवरगुप्ता की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। उन्नत प्रणालियों,

अत्याधुनिक सेंसर्स और परिष्कृत पेलोड से लैस एम क्यू-9 बी (सी गार्डियन) नौसेना की समुद्री क्षेत्र में निगरानी क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि करेगा। ये प्रणाली समुद्री क्षेत्र के विशाल इलाकों में निरंतर खुफिया, निगरानी और टोही कवरेज प्रदान करेंगी।



संपादकीय

जिस तरह जनहित से जुड़े मामलों पर विधेयकों को बिना बहस या चर्चा के ही पारित कर दिए जाने की परंपरा चल पड़ी है, उसका सीधा असर जनता के अधिकारों और लोकतंत्र की सेहत पर पड़ेगा। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में संसद जनहित से जुड़े मुद्दों पर बहस का सर्वोच्च मंच होता है, तो ऐसे में सरकार और विपक्ष की जिम्मेदारी हो जाती है कि वे इसकी उपयोगिता और महत्व को कायम रखें। विडंबना यह है कि जब भी संसद का सत्र शुरू

होता है, किसी न किसी मुद्दे पर सरकार और विपक्ष के बीच असहमति एक टकराव में तब्दील हो जाती है और दोनों सदनों का ज्यादातर समय बेकार चला जाता है।एक ओर विपक्षी पार्टियां सरकार से किसी मुद्दे पर जवाब की मांग करती हैं, तो दूसरी ओर सरकार आमतौर पर ऐसी मांगों की अनदेखी करने का रुख अख्तियार कर लेती है। नतीजतन, हंगामे और सदन को स्थगित किए जाने के समांतर विपक्ष के बहिर्गमन के बीच संसद की

संसद में हंगामा, बिना बहस विधेयक- क्या महज औपचारिकता बन गया है सदन?

कार्यवाही महज औपचारिकता बन कर रह जाती है। जबकि इसी बीच सरकार अपनी सुविधा के मुताबिक ऐसे मसलों पर तैयार विधेयकों को भी बिना चर्चा के पारित करा लेती है, जिन पर विपक्षी दलों के विचार और व्यापक बहस की जरूरत होती है। इस सत्र में कई विधेयकों को पारित करने में इतना कम वक्त लगा, मानो उसके लिए महज औपचारिकता निभाई गई हो।सवाल है कि इस तरह की स्थितियों में संसद और लोकतंत्र की

क्या अहमियत रह जाती है। मानसून सत्र के तीन सप्ताह जिस तरह सिर्फ हंगामे और विपक्ष के बहिर्गमन के दौरान बार-बार स्थगित होते हुए गुजर गए, उससे एक बार फिर यह सवाल उठा है कि क्या संसद को अब सिर्फ दिखावे का ठिकाना मान लिया गया है! वरना क्या वजह है कि एक ओर विपक्षी दलों की ओर से पूरे सत्र के दौरान नीट प्रश्नपत्र लीक, राम मंदिर दान राशि में कथित गड़बड़ी और विद्यार्थियों के विरोध प्रदर्शन पर पुलिस की कार्रवाई के मुद्दे

पर सरकार को घेरा गया, संबंधित और जिम्मेदार मंत्रियों से जवाबदेही की मांग की गई, वहीं सरकार ने इन मसलों पर एक फिक्क़र चुप्पी ओढ़े रखी।खासतौर पर दिल्ली में प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पुलिस की बेरहमी और पैलेट गन चलाने के सवाल पर विपक्ष ने जवाब मांगा, लेकिन गृह मंत्री ने आखिरी दिन इसे लेकर थोड़ी सक्रियता दिखाई, जो प्रकारांतर से बेमानी साबित हुई। अगर यही रुख पहले जाहिर किया गया होता, तो संभव है कि संसद

में कुछ मुद्दों और पेश किए गए विधेयकों पर बहस की गुंजाइश निकल पाती।अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अलग-अलग मुद्दों पर सरकार और विपक्ष के बीच गतिरोध कायम रहने की वजह से कार्य उत्पादकता लोकसभा में महज उन्नीस फीसद और राज्यसभा में उन्तालीस फीसद रही। अब ईस बात पर चिंता जताने में शायद सभी दल शामिल होंगे कि संसद की कार्यवाही नहीं चलने की वजह से करोड़ों रुपए बर्बाद हो गए।

अंगदान की संस्कृति ही मानवता को नई दिशा दे सकती है

(ललित गर्ग)

आज भी अनेक लोग सोचते हैं कि मृत्यु के बाद शरीर को क्षति पहुँचाना धर्म के विरुद्ध है। कुछ लोगों को अगले जन्म की चिंता होती है, कुछ को शरीर के साथ होने वाली चिकित्सा प्रक्रिया का भय होता है और कुछ परिवार अंतिम समय में मानसिक रूप से इतने टूट जाते हैं कि अंगदान का निर्णय नहीं ले पाते।

मनुष्य जीवनभर अपने लिए बहुत कुछ अर्जित करता है-धन, संपत्ति, प्रतिष्ठा, संबंध और सुविधाएँ। लेकिन जीवन की अंतिम घड़ी में इन सबका महत्व समाप्त हो जाता है। तब यदि हमारे शरीर का कोई अंग किसी दूसरे मनुष्य की थड़कन बन जाए, हमारी आँखें किसी अंधेरे जीवन में रोशनी भर दें, हमारा यकृत या गुर्दा किसी परिवार के बुज़ते चिराग को फिर से जला दे, तो इससे बड़ी जीवन-साधकता और क्या हो सकती है? अंगदान मृत्यु के बाद भी जीवन को जारी रखने की वह मानवीय संभावना है, जो मनुष्य को केवल अपने लिए जीने वाले प्राणी से उठाकर मानवता के लिए जीने वाला बना देती है। विश्व अंगदान दिवस हमें इसी महान विचार से जोड़ता है। आज आवश्यकता केवल अंगदान के बारे में जानकारी देने की नहीं, बल्कि हमारी सोच बदलने की है। हमें यह प्रश्न अपने आप से पुछना होगा कि जिस शरीर को मृत्यु के बाद पंचतत्व में विलीन होना है, उसके उपयोगी अंग यदि किसी दूसरे व्यक्ति को जीवन दे सकते हैं तो उन्हें अपने साथ मिट्टी में मिला देना अधिक सार्थक है या किसी की साँसों का हिस्सा बना देना? मृत्यु निश्चित है, लेकिन मृत्यु के बाद भी किसी के जीवन का कारण बनना हमारे हाथ में है।

भारत की सांस्कृतिक स्मृति में शरीर और जीवन के महान त्याग की परंपरा बहुत पुरानी है। महर्षि दधीचि की कथा इसका सबसे प्रभावशाली उदाहरण है। पौराणिक परंपरा के अनुसार जब देवताओं को असुरों से संघर्ष के लिए ऐसे अस्त्र की आवश्यकता हुई जिसे दधीचि की अस्थियों से बनाया जा सके, तब महर्षि दधीचि ने लोककल्याण के लिए अपना शरीर ही त्याग दिया। उनकी अस्थियों से वज्र बनाया गया और उससे जनकल्याण की रक्षा हुई। यह कथा आधुनिक अर्थों में अंगदान की चिकित्सकीय प्रक्रिया नहीं है, लेकिन अपने शरीर को भी समाज और सृष्टि के कल्याण के लिए समर्पित कर देने की भारतीय त्याग-चेतना का अत्यंत शक्तिशाली प्रतीक अवश्य है। भारत के राष्ट्रपति सचिवालय ने भी अंग एवं देहदान की भारतीय परंपरा को समझाते हुए महर्षि दधीचि के इस प्रसंग का उल्लेख किया है। हमारी परंपरा में राजा शिवि की कथा भी त्याग और जीव-दया की अद्भुत मिसाल है। एक कबूतर की रक्षा के लिए उन्होंने अपने शरीर का मांस तक देने की तत्परता दिखाई। चाहे ये प्रसंग धार्मिक आख्यान हों, लेकिन इनके भीतर छिपा संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है-अपने जीवन और शरीर को केवल अपनी निजी संपत्ति न समझना, बल्कि उसे व्यापक जीवन के कल्याण से जोड़ना। जैन दर्शन का सूत्र परस्परोपग्रहो जीवानाम् भी यही बताता है कि जीव एक-दूसरे के उपकार के लिए हैं। अंगदान इस विचार का आधुनिक वैज्ञानिक रूप कहा जा सकता है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने इस मानवीय भावना को वास्तविक जीवन बचाने की शक्ति प्रदान कर दी है। वर्ष 1954 में दुनिया का पहला सफल मानव किडनी प्रत्यारोपण हुआ। रोनाल्ड ली हेरिक ने अपनी एक किडनी अपने जुड़वाँ भाई रिचर्ड को दान की थी। यह घटना चिकित्सा इतिहास में एक ऐसी क्रांति की शुरुआत बनी, जिसने आगे चलकर अंग प्रत्यारोपण को लाखों लोगों के लिए जीवन की आशा बना दिया। इसके बाद 1967 में मानव हृदय प्रत्यारोपण की सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि चिकित्सा विज्ञान मनुष्य की मृत्यु और जीवन के बीच खड़ी कई

दीवारों को तोड़ सकता है। भारत ने भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय यात्रा की है। देश में पहला सफल किडनी प्रत्यारोपण 1 दिसंबर 1971



को चेन्नई के क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्छेर में हुआ था। उस समय शायद किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि एक दिन भारत में हजारों लोगों के लिए अंग प्रत्यारोपण जीवन का नया द्वार बनेगा। आज चिकित्सा तकनीक इतनी आगे बढ़ चुकी है कि किडनी, लिवर, हृदय, फेफड़े, अग्न्याशय और आंत जैसे अंगों के साथ कार्निया, त्वचा, हड्डी और हृदय वाल्व जैसे ऊतकों का भी प्रत्यारोपण संभव है।

लेकिन विज्ञान की क्षमता जितनी बढ़ी है, हमारी सामाजिक चेतना उस गति से नहीं बढ़ पाई। यही सबसे बड़ी चुनौती है। भारत में आज भी प्रत्यारोपण की आवश्यकता और उपलब्ध अंगों के बीच बड़ा अंतर है। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि 2024 में देश में अंग प्रत्यारोपण की गतिविधि व्यापक रही, लेकिन मृतक दाताओं की संख्या अभी भी आवश्यकता की तुलना में बहुत कम है। इसका एक साफ है-हमारे अस्पतालों में तकनीक है, डॉक्टर हैं, सर्जरी की क्षमता है, लेकिन जीवन बचाने के लिए पर्याप्त अंग नहीं हैं। इस स्थिति को बदलने के लिए हमें अंगदान को मृत्यु की चर्चा नहीं, जीवन की चर्चा बनाना होगा। परिवारों में इस विषय पर समय रहते बातचीत होनी चाहिए। स्कूलों, विश्वविद्यालयों, धार्मिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों और मीडिया को मिलकर ऐसी वातावरण-निर्मित करनी होगी जिसमें अंगदान सुनते ही भय नहीं, बल्कि करुणा और जीवन बचाने का भाव पैदा हो।

आज भी अनेक लोग सोचते हैं कि मृत्यु के बाद शरीर को क्षति पहुँचाना धर्म के विरुद्ध है। कुछ लोगों को अगले जन्म की चिंता होती है, कुछ को शरीर के साथ होने वाली चिकित्सा प्रक्रिया का भय होता है और कुछ परिवार अंतिम समय में मानसिक रूप से इतने टूट जाते हैं कि अंगदान का निर्णय नहीं ले पाते। इन भ्रमों का समाधान टकराव से नहीं, संवाद, संवेदना और वैज्ञानिक जानकारी से होगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह समझनी होगी कि अंगदान किसी पर थोपा जाने वाला धार्मिक या सामाजिक कर्तव्य नहीं है। यह एक स्वैच्छिक, नैतिक और मानवीय निर्णय है, जिसे व्यक्ति को विश्वसनीय चिकित्सा एवं कानूनी जानकारी के आधार पर लेना चाहिए। लेकिन यदि कोई व्यक्ति स्वेच्छ से यह संकल्प करता है कि मृत्यु के बाद उसके उपयोगी अंग किसी जरूरतमंद को मिलें, तो वह अपने जीवन की अंतिम घड़ी को भी मानवता के उत्सव में बदल सकता है।

भारत में अंगदान की प्रेरक घटनाएँ लगातार सामने आ रही हैं।

हाल ही में नागपुर में 52 वर्षीय शिक्षक कोंडबा दत्तात्रेय मडवो मृतक अंगदान करने वाले 200वें दाता बने, उनके अंगों से तीन लोगों को नया जीवन मिला। ऐसी घटनाएँ हमें बताती हैं कि अंगदान कोई दूर की आदर्शवादी कल्पना नहीं, बल्कि हमारे आसपास घटने वाली वास्तविक जीवन-बचाने वाली प्रक्रिया है। दिल्ली में 70 वर्षीय मृत महिला के गुर्दे का सफल उपयोग कर एक 56 वर्षीय महिला को जीवन की नई उम्मीद मिली-यह घटना यह भी बताती है कि केवल उम्र के आधार पर किसी संभावित दाता के अंगों को अनुपयोगी मान लेना उचित नहीं है, अंतिम निर्णय चिकित्सा स्थिति पर निर्भर करता है। भारत के कुछ राज्यों ने इस दिशा में उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। तेलंगाना में 2024 में मृतक अंगदान की दर राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक रही और उसके ‘जीवदान’ कार्यक्रम के माध्यम से हजारों प्रत्यारोपण संभव हुए। तमिलनाडु में भी मृतक अंगदान की व्यवस्था ने अनेक परिवारों को प्रेरित

किया हैय 2026 में एक परिवार ने भाषा की बाधा के बावजूद डिजिटल अनुवाद की मदद से अपने प्रियजन के अंगदान का निर्णय लिया और अनेक मरीजों को जीवन मिला। ये घटनाएँ बताती हैं कि जहाँ संवेदना, व्यवस्था और जागरूकता मिलती हैं, वहाँ मृत्यु भी कई जीवनों को बचाने का माध्यम बन सकती है। अंगदान की सबसे बड़ी खूबसूरती यही है कि यह रक्तदान से भी आगे की परोपकार-चेतना है। रक्तदान में हम अपने शरीर की ऐसी चीज देते हैं जिसे शरीर फिर बना लेता है, अंगदान में हम मृत्यु के बाद ऐसी अमूल्य संपदा देते हैं जिसका उपयोग किसी दूसरे शरीर को जीवन देने के लिए हो सकता है। इसलिए अंगदान को केवल चिकित्सा की भाषा में नहीं, मानवीय रिश्तों और करुणा की भाषा में समझना होगा। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि किसी एक दाता का निर्णय कई लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकता है। इसलिए अंगदान केवल एक व्यक्ति की मदद नहीं, बल्कि कई परिवारों में आशा का संचार है। किसी की आँखों में रोशनी, किसी की छाती में थड़कता हृदय, किसी की साँसों में फेफड़ों की शक्ति और किसी के शरीर में काम करता हुआ नया अंग-यह सब किसी अनजान व्यक्ति की उदारता का परिणाम हो सकता है। इसलिए अंगदान को मृत्यु के बाद शरीर का अंत मानने वाली सोच से बाहर निकालकर मृत्यु के बाद भी जीवन देने की अवधारणा से जोड़ना होगा। मृत्यु अंधेरा है, लेकिन अंगदान उस अंधेरे में जलाया गया दीपक है। एक दीपक स्वयं जलता है, लेकिन उसका प्रकाश दूसरों को दिखाई देता है। इसी तरह दाता संसार से चला जाता है, लेकिन उसके अंग किसी और की साँस, थड़कन या दृष्टि बनकर जीवन को रोशन करते रहते हैं। हमारी सबसे बड़ी संपत्ति वह नहीं जो बैंक में जमा है, न वह जो तिजोरी में बंद है और न वह जो हमारे नाम पर दर्ज है। हमारी सबसे बड़ी संपत्ति वह है जिसका उपयोग हमारे बाद भी किसी जीवन को बचाने में हो सके। इस विश्व अंगदान दिवस पर हमें केवल यह संकल्प नहीं लेना चाहिए कि अंगदान करेंगे, बल्कि इससे एक कदम आगे बढ़कर यह संकल्प लेना चाहिए कि अंगदान के बारे में अपने परिवार से बात करेंगे, भ्रम दूर करेंगे और समाज में जीवन बचाने वाली इस चेतना को फैलाएँगे। क्योंकि जीवन का अंतिम अध्याय मृत्यु नहीं होना चाहिए। वह किसी दूसरे के जीवन की नई शुरुआत भी बन सकता है। आइए अपने जीवन की अंतिम विरासत मानवता के नाम करें। अंगदान का दीप जलाएँ, ताकि किसी की बुझती जिंदगी में उजाला हो।

मुस्लिम नाटो के अंतर्विरोध

(केएस तोमर)

जब सुन्नी देशों और शिया-बहुल ईरान के बीच प्रतिद्वंद्विता के कारण क्षेत्र का संतुलन बदल रहा है। हालांकि, तीनों देशों की रणनीतिक प्राथमिकाएं अलग-अलग हैं, पर उनका एक साथ आना ईरान के बढ़ते प्रभाव व क्षेत्रीय संघर्षों के प्रति मुस्लिम देशों की कमजोरी को लेकर उनकी साझा चिंता को दिखाता है। यह प्रमुख सुन्नी ताकतों की ओर से पूरी तरह से अमेरिका पर निर्भर रहने के बजाय, मुस्लिम-नेतृत्व वाला एक अतिरिक्त सुरक्षा ढांचा बनाने की कोशिश है। इसका महत्व इसमें निहित है कि सऊदी अरब, तुर्किये और पाकिस्तान ईरान से खतरे और क्षेत्रीय सुरक्षा के प्रति अमेरिका की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता को लेकर अनिश्चिता, दोनों से निपटने के लिए विकल्प तैयार कर रहे हैं। यह समझौता पूरी तरह से एककीकृत सैन्य गठबंधन नहीं है, और इसकी वास्तविक ताकत इस बात पर निर्भर करेगी कि क्या ये तीनों देश अपने अलग-अलग हितों और खतरों के प्रति अपनी धारणाओं में तालमेल बिठा

तीन सुन्नी देशों और शिया बहुल ईरान के बीच प्रतिद्वंद्विता मुस्लिम नाटो के रूप में सामने आई है, लेकिन इसके अंतर्विरोध भी कम नहीं हैं। पश्चिम एशिया एक नए रणनीतिक दौर में प्रवेश कर रहा है, जिसमें पुराने गठबंधनों की परीक्षा हो रही है और नई साझेदारियां बन रही हैं। इसलिए, सऊदी अरब, तुर्किये और पाकिस्तान के बीच मतका में हुआ रक्षा समझौता संकेत देता है कि तीन प्रभावशाली मुस्लिम-बहुल देश अपनी सुरक्षा पर अधिक नियंत्रण चाहते हैं, खासकर तब, जब अमेरिकी गारंटी पर भरोसा कम होता दिख रहा है। यह समझौता ऐसे समय में हुआ है।

पाते हैं या नहीं। मक्का समझौते को भारत-विरोधी गठबंधन के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए। सऊदी अरब के भारत में बड़े आर्थिक व रणनीतिक हित हैं, जबकि तुर्किये के पाकिस्तान के साथ साझेदारी की तुलना में नई दिल्ली के साथ संबंध अधिक जटिल हैं। भारत को किसी दूसरे गुट में शामिल होने के बजाय अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को मजबूत करना चाहिए। बड़ी अर्थव्यवस्था, मजबूत सैन्य क्षमताएं, गहरी कूटनीतिक साझेदारी और सत्ता के प्रतिस्पर्धी केंद्रों के साथ लगातार जुड़ाव तय करेगा कि भारत उपरती हुई व्यवस्था को आकार दे सकता है या नहीं। यूएई, फ्रांस, इस्राइल व अन्य रणनीतिक साझेदारों के साथ भारत की

साझेदारी भी महत्वपूर्ण होती जाएगी। आर्थिक निर्भरता, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री सहयोग और आतंकवाद-विरोधी प्रयास इस जुड़ाव के मुख्य आधार बने रहने चाहिए। भारत के लिए बड़ा सबक यह है कि पश्चिम एशिया तेजी से बहुध्रुवीय होता जा रहा है। नई दिल्ली इस क्षेत्र को केवल वाशिंगटन या खाड़ी के अलग-अलग देशों के साथ अपने संबंधों के नजरिये से नहीं देख सकती। भारत को अमेरिका से मजबूत रिश्ते रखते हुए खाड़ी और सऊदी अरब से रणनीतिक जुड़ाव बढ़ाना चाहिए। साथ ही ईरान और तुर्किये से संतुलित संबंध बनाए रखने चाहिए।

नए गठबंधन की पहली चुनौती राजनीतिक प्रतीकों को भरोसेमंद सैन्य गठबंधन में

बदलना है। पाकिस्तान की मुख्य सुरक्षा चिंता भारत है; सऊदी अरब का ध्यान ईरान और मिसाइल, ड्रोन व क्षेत्रीय संघर्षों से होने वाले खतरों पर है; जबकि तुर्किये नाटो के व्यापक ढांचे के भीतर काम करता है और सीरिया, इराक, भूमध्य सागर और काकेशस में उसके आपने हित हैं। दूसरी चुनौती स्वतः हस्तक्षेप का सवाल है। समझौते के तहत 'एक पर हमला, सब पर हमला' की घोषणा का मतलब यह नहीं कि तीनों देश हर संघर्ष में सैन्य रूप से शामिल होंगे। इसका ताजा उदाहरण सऊदी तेल संयंत्रों और लाल सागर में टैंकरों पर हालिया हूती हमला है, जिस पर न तो पाकिस्तान और न ही तुर्किये हरकत में आया। तीसरी चुनौती पहले से ही अस्थिर

क्षेत्र में एक कठोर गुट बनाने से बचना है। सऊदी अरब अपनी रक्षा क्षमता को मजबूत करते हुए ईरान से बातचीत कर रहा है। तुर्किये की नाटो के प्रति प्रतिबद्धताएँ हैं। पाकिस्तान को चीन, खाड़ी देशों और अमेरिका के साथ अपने संबंधों में संतुलन बनाना होगा। ये परस्पर विरोधी हित समझौते की एकजुटता को सीमित कर सकते हैं।

भारत की चिंता एक और नाटो बनने की नहीं, बल्कि यह है कि क्या पाकिस्तान मक्का समझौते का इस्तेमाल अपनी कूटनीतिक व रणनीतिक पहुँच बढ़ाने के लिए कर सकता है। पाकिस्तान को असल फायदा ज्यादा मजबूत प्रतिरोध क्षमता, राजनीतिक समर्थन, रक्षा सहयोग और वैश्विक स्तर पर अहमियत मिलने से होगा।

नासा और इसरो- द्विपक्षीय अंतरिक्ष सहयोग के क्षेत्र में हुई अहम पहल, भारत के स्पेस विजन-2047 को मिलेगी गति

(ज्योति भास्कर)

नासा का अपने व्यापक मून बेस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए इसरो को निमंत्रण देना द्विपक्षीय अंतरिक्ष सहयोग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। भारत के स्पेस विजन-2047 के मद्देनजर अंतरिक्ष में अमेरिकी अनुभव भारत की तैयारियों को भी गति दे सकता है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा का भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को अपने मून बेस कार्यक्रम में शामिल होने का निमंत्रण देना भारत-अमेरिका अंतरिक्ष सहयोग के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मोड़ तो खैर है ही, यह इस बात की अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति भी है कि चंद्रमा पर मानव की दीर्घकालिक उपस्थिति की दिशा में किए जा रहे प्रयासों में भारत एक उपयोगी और विश्वसनीय साझेदार हो सकता है। उल्लेखनीय है कि नासा का मून बेस कार्यक्रम सामान्य अर्थों में किसी चंद्र अभियान का विस्तार नहीं है। इसका लक्ष्य चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट चरणबद्ध ढंग से ऐसी स्थायी अवसरचना विकसित करना है, जहां अंतरिक्ष यात्री रहकर वैज्ञानिक अनुसंधान कर सकें। दक्षिणी ध्रुव इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि वहां स्थायी छाया वाले क्षेत्रों में बर्फ के रूप में पानी की मौजूदगी की संभावना है, जो भविष्य में पीने के पानी, ऑक्सीजन और ईंधन जैसे संसाधनों के लिए उपयोगी हो सकती है। भारत के लिए इस प्रस्ताव की अहमियत इसलिए भी बढ़ जाती है, क्योंकि चंद्रमा के इसी दक्षिणी ध्रुव पर भारत ने 2023 में चंद्रयान-3 के जरिये ऐतिहासिक सॉफ्ट लैंडिंग की थी। उस सफलता ने भारत को केवल चंद्रमा पर उतरने वाले चुनिंदा देशों में शामिल नहीं किया, बल्कि अत्यंत चुनौतीपूर्ण दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में उतरने की उसकी क्षमता भी प्रदर्शित की। यही वजह है कि अब नासा उसी अनुभव और तकनीकी दक्षता को अपने व्यापक मून बेस कार्यक्रम के लिए उपयोगी मान रहा है। उल्लेखनीय है कि पिछले कुछ वर्षों में दोनों देशों की अंतरिक्ष एजेंसियां अधिक करीब आई हैं। 2023 में जब भारत, अमेरिकी नेतृत्व वाले अंतरिक्ष गठबंधन आर्टेमिस में शामिल हुआ, तब उसी वर्ष दोनों देश सहमत हुए थे। 2025 में भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला की आईएसएस की उड़ान इसी सहयोग का नतीजा थी। गौरतलब है कि भारत ने 2040 तक किसी भारतीय को चंद्रमा पर उतारने और 2035 तक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन विकसित करने का लक्ष्य रखा है। जाहिर है कि नासा का निमंत्रण भारत के स्पेस विजन-2047 के लिए निस्संदेह उपयोगी साबित होगा और अंतरिक्ष में अमेरिका का अनुभव भारत की तैयारियों को गति भी दे सकता है। नासा का निमंत्रण सिर्फ चंद्रमा की तरफ बढ़ता एक और कदम नहीं, बल्कि उस परिवर्तन का भी संकेत है, जिसमें भारत वैश्विक अंतरिक्ष व्यवस्था में दर्शक से भागीदार और भागीदार से नेतृत्वकर्ता बनने की ओर बढ़ रहा है।



दिमाग ही नहीं शरीर के इन हिस्सों में भी जमा होता है तनाव

क्या आपको लगता है कि स्ट्रेस सिर्फ दिमाग में ही जमा होता है या स्ट्रेस की वजह से सिर्फ मेंटल हेल्थ प्रभावित होती है, तो आप गलत हैं। चलिए आपको बताते हैं कि यह शरीर के किन हिस्सों को किस तरह प्रभावित कर सकता है। स्ट्रेस सिर्फ हमारे दिमाग में ही नहीं, बल्कि शरीर के कई अंगों को प्रभावित करता है। अंदर दबा हुआ गुस्सा, डर, चिंता और घबराहट कैसे शरीर पर असर डाल सकती है।

शरीर में हो सकता है दर्द

लगातार तनाव में रहने के कारण शरीर में दर्द भी हो सकता है। आमतौर पर मन में दबी हुई भावनाएं, बोझ और तनाव, गर्दन में दर्द का कारण बन सकता है। इसके अलावा मांसपेशियों और हड्डियों में दर्द भी हो सकता है।

रिप्रोडक्टिव हेल्थ हो सकती है प्रभावित

लंबे समय तक स्ट्रेस में रहने की वजह से हार्मोन्स इबैलेंस होने लगते हैं और इसके कारण महिलाओं के पीरियड्स, ओव्युलेशन और रिप्रोडक्टिव हेल्थ प्रभावित होती है। इसकी वजह से महिलाएं पीसीओडी का शिकार हो सकती हैं।

भूख पर होता है असर

तनाव के चलते भूख पर भी असर होता है। कई लोगों की भूख बढ़ जाती है, तो कई लोगों की कम होने लगती है। इसके चलते एसिडिटी, जलन, गैस और कब्ज भी हो सकता है। तनाव से मेटाबॉलिज्म भी प्रभावित होता है।

इंफेक्शन का बढ़ सकता है खतरा

ज्यादातर लोग इस बात को नहीं जानते हैं कि तनाव की वजह से इंफेक्शन हमें जल्दी घेर लेते हैं और घाव भरने में भी देर होती है। बार-बार मौसमी इंफेक्शंस का शिकार होना भी क्रॉनिक स्ट्रेस का संकेत हो सकता है।



कान में खुजली सर्दी, फलू, एलर्जी का लक्षण

कब बढ़ता है जोखिम, बचने के उपाय

कान में खुजली को अक्सर अपर रेस्पिरेटरी इन्फेक्शन यानी नाक, गले और साइनस का वायरल या बैक्टीरियल इन्फेक्शन का शुरुआती संकेत मान लिया जाता है। इसमें सर्दी-जुकाम, गले में खराश, नाक बहना और हल्की खांसी जैसे लक्षण देखे जा सकते हैं। सर्दी या फलू के दौरान अपर रेस्पिरेटरी एरिया में सूजन आ जाती है। कान, नाक और गला आपस में जुड़े होते हैं, इसलिए यह सूजन ईयर कैनाल या यूस्टेशियन ट्यूब तक फैल सकती है। इससे हल्की खुजली या कान में भारीपन महसूस हो सकता है। एलर्जी की स्थिति में शरीर हिस्टामाइन छोड़ता है, जिससे नाक, गले और कान के अंदर भी खुजली होती है। कानों में खुजली कभी-कभी सर्दी या एलर्जी का शुरुआती संकेत हो सकता है, लेकिन हर केस में इसका कारण एक जैसा नहीं हो सकता। इस लेख में हम कान में खुजली के कारण और बचने के उपाय बता रहे हैं।

कान में खुजली के कारण

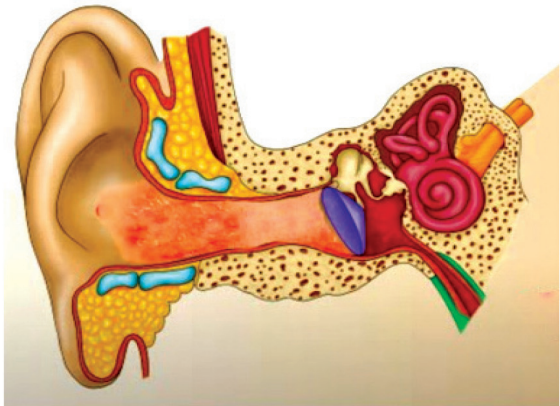
कान में खुजली सिर्फ नाक, गले और साइनस के वायरल या बैक्टीरियल इन्फेक्शन के कारण नहीं होती इसके अन्य कारण भी हो सकते हैं। आमतौर पर कान में खुजली के ये कारण हो सकते हैं-

ईयर कैनाल में सूखापन

कान का मैल ईयर कैनाल यानी कान की नलिका को नम रखने और इन्फेक्शन से बचाने में मदद करता है। जब यह मैल ज्यादा सफाई या स्किन प्रॉब्लम के कारण कम हो जाता है, तो कान के अंदर की त्वचा सूख जाती है और उसमें खुजली होने लगती है।

फंगल इन्फेक्शन

जिन जगहों पर ह्यूमिडिटी और गर्मी ज्यादा होती है वहां के लोगों में कान में खुजली की समस्या हो सकती है। ऐसी जगहों के लोग गर्मी से राहत पाने के लिए स्विमिंग करते हैं, जिससे कान में पानी जाने की संभावना बढ़ जाती है। इससे कान में खुजली के साथ बेचैनी, डिस्चार्ज या दुर्गंध भी आ सकती है।



एलर्जी

ये भी कान में खुजली का एक प्रमुख कारण है। धूल, पराग, हेयर प्रोडक्ट्स के संपर्क में आने या लंबे समय तक ईयरफोन और हियरिंग एड्स का उपयोग करने से भी कान की नलिका में जलन और खुजली हो सकती है।

कॉटन बड्स का उपयोग

बार-बार कॉटन बड्स का उपयोग करना या कान में कोई वस्तु डालना अंदर की नाजुक त्वचा को नुकसान पहुंचा सकता है। ऐसा करने से कान में खुजली, जलन और कभी-कभी इन्फेक्शन भी हो सकता है।

कान में खुजली से बचने के लिए क्या करें

खुजली होने पर कॉटन बड्स या कोई अन्य चीज कान में डालना हानिकारक हो सकता है। इससे कानों में चोट या इन्फेक्शन का जोखिम बढ़ सकता

कान में खुजली एक आम समस्या है, जिसे कई लोग गैरजरूरी मानकर अनदेखा कर देते हैं। कुछ मामलों में यह एलर्जी या अपर रेस्पिरेटरी इन्फेक्शन जैसी समस्याओं का शुरुआती संकेत हो सकता है। कई लोग ये मानते हैं कि कान में खुजली होना सर्दी, फलू या एलर्जी का शुरुआती संकेत है, लेकिन हर बार ऐसा हो ये जरूरी नहीं।

है। अगर एलर्जी के कारण कान में खुजली हो रही है तो ऐसी चीजों से दूर रहें। कानों में खुजली से बचने के लिए ये तरीके अपनाए जा सकते हैं-

- कानों को सूखा रखें, खासकर नहाने या तैरने के बाद
- कान के बाहरी हिस्से को साफ तौलिए से पोछें
- ईयरफोन या ईयरबड्स का इस्तेमाल कम करें
- एलर्जी पैदा करने वाली चीजों से बचें

कानों के लिए कौन सी

आदतें हानिकारक

कई लोग अनजाने में गलत आदतें अपनाकर कान में खुजली की समस्या को बढ़ा देते हैं। इससे कान की प्राकृतिक सुरक्षा हटती है, स्किन को नुकसान पहुंचता है और इन्फेक्शन का खतरा बढ़ सकता है। कानों की सुरक्षा के लिए ये आदतें हानिकारक हैं-

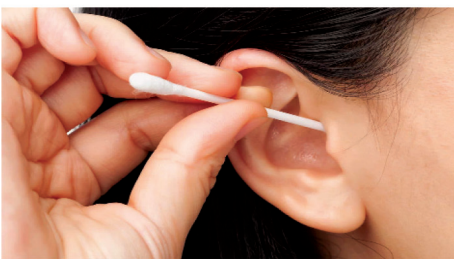
- बार-बार उंगलियों से कान खुजलाना
- कान में तेल या अन्य चीजें डालना
- एक्सपर्ट से सलाह लिए बिना खुद दवा या ईयर ड्रॉप्स का उपयोग करना
- कान साफ करने के लिए कॉटन बड्स, पिन, चाबी या किसी नुकीली चीज का इस्तेमाल करना

कानों के लिए कौन सी स्थितियां नुकसानदायक

कानों में कभी-कभार खुजली होना आम बात है, लेकिन खुजली लगातार बढ़ने लगे तो ये नॉर्मल नहीं है। निम्नलिखित लक्षण दिखाई दें तो उन्हें नजरअंदाज न करें और कानों की जांच कराएं-

- कानों में लगातार खुजली
- कान बंद होने का एहसास
- कानों में दर्द या जलन
- कान के आसपास सूजन
- सुनने में परेशानी
- कान बहना

कानों में खुजली को नजरअंदाज न करें



कई बार कानों में खुजली मामूली परेशानी लग सकती है, लेकिन लापरवाही के कारण समस्या बढ़ सकती है। कानों को सुरक्षित रखने के लिए उनकी अच्छी तरह सफाई करें, हानिकारक आदतों से बचें, खुजली और अन्य लक्षणों पर ध्यान दें। खुजली या अन्य कोई समस्या बढ़ने लगे तो तुरंत जांच कराएं।



सावन में क्या खाएं और क्या न खाएं? जानें सही डाइट प्लान

सावन का महीना धार्मिक आस्था के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिहाज से भी काफी अहम माना जाता है। इस मौसम में नमी बढ़ जाती है और इंफेक्शन का खतरा भी अधिक होता है। वहीं पाचन तंत्र भी कुछ हद तक धीमा हो जाता है। ऐसे में इस मौसम में डाइट में कुछ खास बदलाव बेहद जरूर होते हैं।

सावन के पवित्र महीने में, संतुलित और सात्विक आहार, सेहत को बेहतर बनाने में मदद करता है। इस महीने में आसानी से पचने वाले, शरीर में पानी की कमी पूरी करने वाले और पोषक तत्वों से भरपूर फूड्स पर ध्यान देना चाहिए। वहीं तामसिक और प्रोसेस्ड फूड्स से दूर रहना चाहिए। इस मौसम में क्या खाना चाहिए और क्या नहीं, चलिए इस बारे में हेल्थ एक्सपर्ट से जानते हैं।

सावन के महीने में क्या खाएं

डाइटिशियन श्वेता का कहना है कि सावन में आप व्रत रखें या सामान्य भोजन करें, दोनों की स्थिति में आपको हल्की और बैलेंस डाइट लेनी चाहिए। इस मौसम में आपको ऐसे फूड्स को डाइट में शामिल करना चाहिए, जिन्हें आप आसानी से पचा पाएं।

- इस समय पर सीजनल फ्रूट्स जैसे केला, सेब, पीपता और अनार जरूर खाएं।
- इनसे शरीर को एनर्जी और हाइड्रेशन मिलता है।
- कटु, सिंघाड़े और

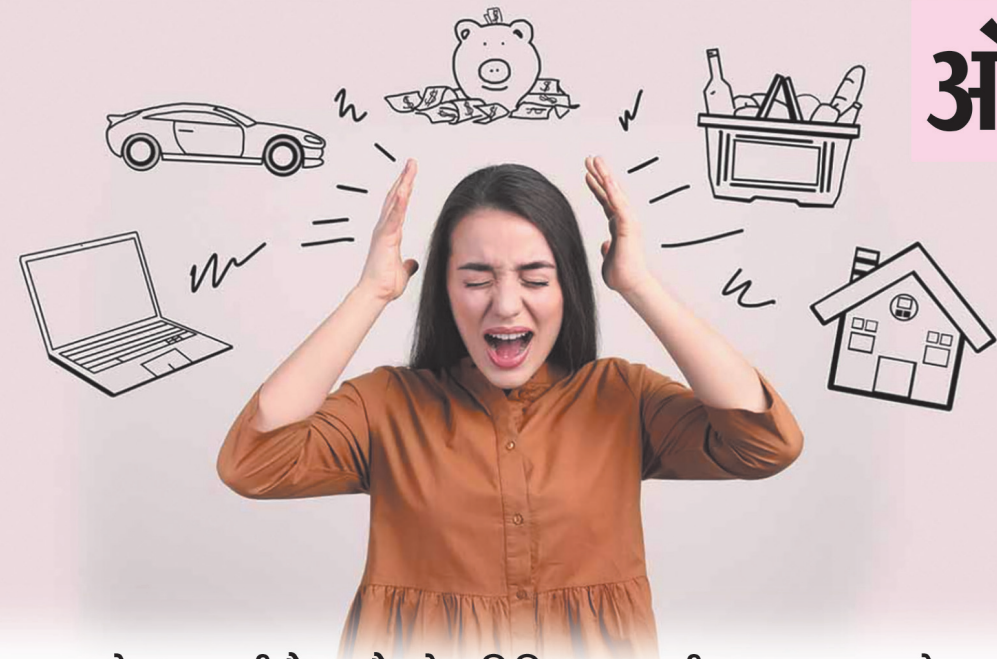
अमरंथ (राजगिरा) का आटा खाएं।

- दूध, दही, छाछ और पनीर को डाइट का हिस्सा बनाएं। इनसे शरीर को प्रोटीन और कैल्शियम मिलेगा।
- आलू, कद्दू, लोकी और कच्चे केले जैसी सब्जियों को भोजन में जरूर शामिल करें।
- सूखे मेवे, मखाना और सेंधा नमक जरूर खाएं। इससे शरीर को ताकत मिलती है और इलेक्ट्रोलाइट बैलेंस बना रहता है।
- गुनगुना पानी, नारियल पानी और सौंफ-अजवाइन का पानी पीने से शरीर में पानी की कमी नहीं होगी और डाइजेशन भी दुरुस्त रहेगा।

सावन के महीने में क्या न खाएं

सावन के महीने में भारी भोजन नहीं खाना चाहिए। इसे पचाना मुश्किल होता है। खासतौर पर रात के समय हल्का भोजन करना चाहिए। आप डिनर में सिर्फ सूप भी ले सकती हैं।

- गेहूँ, दाल और बेसन को डाइट में शामिल न करें।
- लहसुन, प्याज और मसालेदार खाने से दूर रहें।
- नॉनवेज फूड्स, अंडे और एल्कोहल से दूरी बनाना बेहतर रहेगा।
- फ्राइड, पैकेज्ड और तले-भुने खाने से दूर रहें क्योंकि इससे पाचन तंत्र पर दबाव पड़ता है।
- इस समय पर हरी पत्तेदार सब्जियां और बैंगन न खाएं। इससे मानसून में बैक्टीरियल इंफेक्शन का खतरा रहता है।



क्या मुझे एंजायटी है या मैं ओवरथिंकिंग कर रही हूं? अगर आपके मन में भी यह सवाल है, तो चलिए एक्सपर्ट से समझते हैं कि आखिर ओवरथिंकिंग कब एंजायटी बन जाती है और किन लक्षणों को आपको नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

ओवरथिंकिंग कब बन जाती है एंजायटी

एक्सपर्ट से समझें

नाव...डिप्रेशन...ओवरथिंकिंग और एंजायटी, इन सभी का सीधा संबंध हमारी मेंटल हेल्थ से होता है। आज के वक्त में फिजिकल हेल्थ से कहीं ज्यादा लोगों की मेंटल हेल्थ खराब है, लेकिन इसे लेकर जागरूकता की अभी भी कमी है। हम सभी अपने आज, आने वाले कल और गुजरे हुए वक्त के बारे में सोचते हैं, लेकिन कई बार ये सोच ओवरथिंकिंग में बदल जाती है। करियर, रिलेशनशिप, काम का प्रेशर और गलत फैसलों समेत कई वजहों से हम ओवरथिंकिंग करने लगते हैं और फिर कब ये एंजायटी में बदल जाती है, हमें खुद पता नहीं चलता है। आखिर ओवरथिंकिंग

कब एंजायटी बन जाती है और किन लक्षणों को हमें बिल्कुल नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, चलिए इसका जवाब एक्सपर्ट से जानते हैं। इस बारे में हार्मोन, गट और मेंटल हेल्थ कोच मनप्रीत जानकारी दे रही हैं।

ओवरथिंकिंग कब बन जाती है एंजायटी?

अक्सर लोगों को लगता है कि ओवरथिंकिंग और एंजायटी एक ही है, लेकिन ऐसा नहीं है। ओवरथिंकिंग को आप एंजायटी का एक हिस्सा कह सकते हैं, लेकिन इसे एंजायटी नहीं कहा जा सकता है।

अगर आप सोच रही हैं कि 'अगर ऐसा हुआ तो क्या होगा?' या 'अगर ऐसा नहीं हो पाया, तो क्या सब खत्म हो जाएगा?', तो इसे ओवरथिंकिंग कहा जा सकता है, लेकिन यह घबराहट या एंजायटी में तब बदलने लगती है, जब आपकी सोच, आपके विचार किसी हल पर रुकने के बजाय लगातार 'बुरे रिजल्ट' के साइकिल में फंस जाते हैं और आपके डेली रूटीन और मेंटल हेल्थ को प्रभावित करने लगते हैं।

शरीर और मन की एक अवस्था है, एंजायटी

एंजायटी शरीर और मन की एक ऐसी अवस्था है, जिसमें आपको आपके पूरे सिस्टम में एक बेचैनी महसूस होती है। ओवरथिंकिंग इसका बस एक हिस्सा है। कई बार ओवरथिंकिंग में जब आप

सभी विचारों को मन के अंदर रखती हैं, अपने इमोशंस या डर को जाहिर नहीं कर पाती हैं, तो ये आपके दिमाग के अंदर इकट्ठा होने लगते हैं और आपको एंजायटी महसूस होती है। ओवरथिंकिंग कई बार कुछ लोगों की आदत में शूमार हो सकती है और कई बार ये मेंटल हेल्थ पर बुरा असर नहीं डालती है, वहीं एंजायटी शरीर की एक भावनात्मक और शारीरिक प्रतिक्रिया है, जो दिमाग से शुरू होकर पूरे शरीर पर असर करती है। इसमें हाथ-पैर कांपना, दिल की धड़कन तेज होना, नींद आने में मुश्किल और पेट या सीने में बेचैनी महसूस हो सकती है। अगर आप क्रॉनिक स्ट्रेस में हैं और आपको अक्सर एंजायटी महसूस होती है, तो डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

संक्षिप्त समाचार

कलर्स का नया शो ‘108 बेस हॉस्पिटल - उरी’, देखिए हर शनिवार और रविवार रात 8 बजे, सिर्फकलर्स और जियोहॉटस्टार पर

आज हम जिस आज़ादी का जश्न मना रहे हैं, वह अनगिनत साहसिक कारनामों की विरासत है – कुछ युद्धभूमि पर जीते गए, तो कुछ आर्मी हॉस्पिटल के गलियारों में, जहाँ मिशन हर उस सैनिक को बचाना है जो देश के लिए लड़ रहा है। इस स्वतंत्रता दिवस पर कलर्स आर्मी डॉक्टर्स की अनसुनी बहादुरी का सम्मान करता है ‘108 बेस हॉस्पिटल डू उरी’ के साथ डू यह पहलीबार पेश की जाने वाली आर्मी हॉस्पिटल सीरीज़ है और अनोखी फ़नडाइट सीरीज़ भी। दर्शकों तक दमदार और अलग कहानियाँ पहुँचाने की अपनी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए कलर्स अब उस युद्धभूमि पर रोशनी डाल रहा है जहाँ डॉक्टर्स के हथियार हैं सेवा, साहस और समर्पण। उरी के इंडियन आर्मी बेस हॉस्पिटल में सेट यह शो उन असाधारण डॉक्टर्स, नर्सों और मेडिकल स्टाफ़ की कहानी है जो निस्वार्थ भाव से समय के खिलाफ़जग लड़ते हैं, घायल सैनिकों को फ़िर से फ़्रंटलाइन और अपने परिवारों तक लौटने का एक और मौका देते हैं। एपिक कंपनी द्वारा निर्मित और एरोम एंटरटेनमेंट द्वारा सहनिर्मित इस शो में एरिका फ़र्नांडिस डॉ. मेजर नैना के रूप में, ग़शमी महाजनी डॉ. मेजर अनिरुद्ध के रूप में और निखिल खुराना मेजर समीर दीक्षित के रूप में नज़र आएंगे। आयोशी तालुकदार डॉ. कैप्टन मिली बनर्जी की भूमिका निभा रही हैं, हितेन तेजवानी डॉ. कर्नल सुर्याकांत ठाकुर के रूप में और स्मिता बंसल लेफ़्टिनेंट कर्नल प्रिंसिपल मैट्रन कविता झा के रूप में दिखाई देंगी।

ऑपरेशन सिंदूर में पहली बार एक साथ नज़र आए भारत के शीर्ष सैन्य और राष्ट्रीय सुरक्षा नेतृत्व

इस स्वतंत्रता दिवस पर डिस्कवरी चैनल डीकलासिफ़ाइड: ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से दर्शकों को भारत के शीर्ष सैन्य अधिकारियों, राष्ट्रीय सुरक्षा नेतृत्व, ऑपरेशनल कमांडरों और अग्रिम मोर्चे पर तैनात जवानों के अनुभवों से रूबरू करा रहा है। वास्तविक और ऐतिहासिक घटनाओं को गहराई से दिखाने की अपनी परंपरा को निभाते हुए डिस्कवरी की यह डॉक्यू- सीरीज़ अधिकारियों की जुबानी यह सामने लाती है कि इस अहम ऑपरेशन के महत्वपूर्ण फैसले कैसे लिए गए और इसे कैसे अंजाम दिया गया। 15 अगस्त 2026 को डिस्कवरी चैनल पर प्रसारण के बाद, दो भागों की यह डॉक्यू-सीरीज़ अब डिस्कवरी+ एप पर देखने के लिए उपलब्ध है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने अपने पहले इंटरव्यू में इस डॉक्यू-सीरीज़ में कहा कि हमने यह फैसला कर लिया था कि इस ऑपरेशन का एकमात्र उद्देश्य दुश्मन के ठिकानों खासकर पहलगाम हमले के लिए जिम्मेदार आतंकों कैपों को पूरी तरह तबाह करना है। उन्होंने यह भी कहा कि, दुनिया को हमारा संदेश बिल्कुल साफ़ है कि भारत की उदारता या उसके संयम को उसकी कमजोरी समझने की गलती कतई न की जाए। भारत जोखिम उठा सकता है और भारत इसके अंजाम की परवाह किए बिना करारा प्रहार कर सकता है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद की परिस्थितियों से शुरू होने वाला पहला भाग दिखाता है कि किस तरह सशस्त्र बलों और खुफ़िया एजेंसियों ने कार्रवाई शुरू की।

Samsung Solve for Tomorrow ने भारत के टॉप 40 युवा इनोवेटर्स के नामों की घोषणा की

Samsung इंडिया ने आज Samsung सॉल्व फॉर टुमोरो’ के टॉप 40 सेमी-फ़इनलिस्ट टीमों की घोषणा की। यह युवाओं के लिए Samsung का खास इनोवेशन प्रोग्राम है, जो उन्हें अपने आस-पास की चुनौतियों को पहचानने और मेंटरशिप, टेक्नोलॉजी, प्रोटोटाइपिंग और प्रैक्टिकल लर्निंग के ज़रिए अपने आईडिया को समाधान में बदलने का मंच देता है। भारत में 2026 में अपने पांचवें एडिशन में चल रहा ‘Samsung सॉल्व फॉर टुमोरो’ 14 से 22 साल के युवाओं के लिए है और इसे देश की अगली पीढ़ी में समस्या सुलझाने की क्षमता और इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। टॉप 40 टीमें 15 राज्यों और 26 शहरों से हैं, जिनमें से आधी से ज्यादा टीमें टियर 2 और टियर 3 शहरों से हैं। वाराणसी, कोयंबटूर, गुंटूर, अमृतसर, सुंदरगढ़ और राजकोट के युवा इनोवेटर्स ने बड़े टेक्नोलॉजी और एजुकेशन हब की टीमों के साथ नेशनल सेमी-फ़इनल में जगह बनाई है। इस शॉर्टलिस्ट में ‘Samsung सॉल्व फॉर टुमोरो 2026’ के चार थीम – AI लिविंग फॉर इंडिया’, ‘हेल्थ एंड एजुकेशन’, ‘एनवायरनमेंटल सरटेनेबिलिटी’ और ‘स्पोट एंथेटीक’ – में से हर एक के लिए 10–10 टीमें शामिल हैं। इस साल के टॉप 40 में जो बात सबसे खास है, वह यह है कि युवा अपने आस-पास की दुनिया को कितनी बारीकी से देख रहे हैं। वे अपने समुदायों, क्लासरूम, खेलों, बिजनेस और खेल के मैदानों में समस्याओं की पहचान कर रहे हैं और यह सोच रहे हैं कि टेक्नोलॉजी कैसे बदलाव ला सकती है।

जनसंपर्क की सभी विधाओं में उत्कृष्ट कार्य के लिए सहायक जनसंपर्क अधिकारी श्रीमती रचना मिश्रा सम्मानित किए गए..

■ केंद्रीय राज्यमंत्री श्री तोखन साहू ने स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह में प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

बिलासपुर/ संवाददाता

स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह के मंच से जनसंपर्क विभाग बिलासपुर की सहायक जनसंपर्क अधिकारी श्रीमती रचना मिश्रा को जनसंपर्क के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्य के लिए सम्मानित किया गया। मुख्य समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्यमंत्री श्री तोखन साहू ने उन्हें प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया और उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। श्रीमती रचना मिश्रा ने जनसंपर्क की विभिन्न विधाओं में उत्कृष्ट कार्य करते हुए विभागीय दायित्वों का प्रभावी निर्वहन किया है।



बिलासपुर जिले में माननीय राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री सहित राज्यपाल और मुख्यमंत्री के प्रवास के दौरान समाचारों के त्वरित प्रेषण तथा मीडिया समन्वय में

उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने स्थानीय मीडिया प्रतिनिधियों के साथ बेहतर तालमेल एवं समन्वय स्थापित करते हुए समाचारों के प्रभावी प्रसारण में योगदान

दिया है। राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं एवं जन कल्याणकारी कार्यक्रमों पर आधारित समाचार, सफलता की कहानियों और आलेखों के निर्माण में भी

दिया है। राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं एवं जन कल्याणकारी कार्यक्रमों पर आधारित समाचार, सफलता की कहानियों और आलेखों के निर्माण में भी

देश-विदेश

केंद्रीय राज्यमंत्री तोखन साहू ने किया ध्वजारोहण

गरिमामय माहौल में मनाया गया 80 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

■ नक्सल हिंसा में शहीद

जवानों के परिजनों का

सम्मान, उत्कृष्ट कार्य करने

वाले अधिकारी-कर्मचारियों

को प्रशस्ति पत्र

■ तिरंगा शपथ के साथ लिया

नशामुक्त समाज का

संकल्प, देशभक्ति से

ओतप्रोत सांस्कृतिक

प्रस्तुतियों ने बांधा समां

बिलासपुर। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आज बिलासपुर के पुलिस परेड ग्राउंड में केंद्रीय आवासन एवं शहरी विकास राज्यमंत्री श्री तोखन साहू ने ध्वजारोहण किया। आजादी का पर्व गरिमामय और उत्साहपूर्ण माहौल में मनाया गया। इस अवसर पर बेलतरा

विधायक श्री सुशांत शुक्ला, पाठ्य पुस्तक निगम के अध्यक्ष श्री राजा पांडे, महापौर श्रीमती पूजा विधानी, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री राजेश सूर्यवंशी, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती ललिता संतोष कश्यप, संभागयुक्त श्री सुनील जैन, कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल, एसएसपी श्री रजनेश सिंह, सीसीएफ़ श्री मनोज पांडे मौजूद थे। ध्वजारोहण के पश्चात राष्ट्रगान हुआ। परेड कमांडर श्री भूपेन्द्र गुप्ता द्वारा राष्ट्रगान की धुन पर सलामी दी गई। पूर्ण वेशभूषा में सजे 13 प्लाटूनों ने अनुशासन, शौर्य और देशभक्ति से ओतप्रोत भव्य एवं आकर्षक परेड का प्रदर्शन किया। **मुख्यमंत्री के संदेश का किया वाचन** – केंद्रीय राज्यमंत्री श्री तोखन साहू ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का प्रदेश की जनता के नाम संदेश का वाचन किया। उन्होंने प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दीं तथा प्रदेश के विकास और जनकल्याण के लिए किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख किया।**तिरंगा शपथ के**



साथ नशामुक्ति का लिया संकल्प – समारोह के दौरान केंद्रीय राज्यमंत्री श्री तोखन साहू ने उपस्थित सभी लोगों को तिरंगा शपथ दिलाई। वहीं ब्रह्मकुमारी दीदी ने उपस्थित जनसमुदाय को नशामुक्ति की शपथ दिलाई। इस अवसर पर राष्ट्रप्रेम, देश के प्रति कर्तव्यबोध और नशामुक्त समाज के निर्माण का संकल्प लिया गया। **नक्सल हिंसा में शहीद जवानों के**

परिजनों का किया गया सम्मान – कार्यक्रम में नक्सल हिंसा में शहीद हुए जवानों के परिजनों को केंद्रीय राज्यमंत्री श्री तोखन साहू ने सम्मानित किया। शहीद जवानों के परिजनों के सम्मान के अवसर पर कार्यक्रम स्थल भावुक और गौरवपूर्ण माहौल से भर उठा। उपस्थित लोगों ने वीर जवानों के बलिदान को नमन किया। **उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारी-कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र से**

दुष्कर्म मामले में दोषमुक्त किए गए अमृतलाल केरकेट्टा और आशु राठौर

कोरबा। वर्ष 2009 के बहुचर्चित अपहरण, दुष्कर्म और धोखाधड़ी के मामले में छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट, बिलासपुर ने तत्कालीन पुलिस उप निरीक्षक अमृतलाल केरकेट्टा और आशु राठौर को दोषमुक्त कर दिया है। 10 दिसंबर 2025 को सुनाए फैसले में कोर्ट ने ट्रायल कोर्ट की दोषसिद्धि और सजा निरस्त कर दी। अन्य आरोपियों को पहले ही बरी किए जाने के खिलाफ राज्य की अपील भी खारिज कर दी गई। सत्र न्यायालय, कोरबा ने 19 मार्च 2012 को अमृतलाल केरकेट्टा को आईपीसी की धारा 376(1) में 7 वर्ष का कठोर कारावास और आशु राठौर को धारा 420 तथा धारा 376(1)/109 में क्रमशः 1 वर्ष और 7 वर्ष की सजा सुनाई थी। अभियोजन के अनुसार पीड़िता को नौकरी दिलाने का भरोसा देकर

आशु राठौर ने उसका एटीएम कार्ड और जेवर लिए तथा बाद में उसे बिलासपुर ले जाया गया, जहां अमृतलाल केरकेट्टा द्वारा जबरन यौन संबंध बनाने का आरोप था। इसके बाद उसे कोरबा, सक्ती और रायगढ़ ले जाने तथा धमकाकर रखने के आरोप भी लगाए गए थे। हाईकोर्ट ने पीड़िता के बयान का विस्तार से परीक्षण किया। कोर्ट के समक्ष उसने स्वीकार किया कि उसने शुरुआत में अमृतलाल और आशु के पक्ष में शपथपत्र और बयान दिया था, जिसमें उसने माता-पिता से परेशान होकर नौकरी की तलाश में बिलासपुर जाने की बात कही थी। बाद में माता-पिता और रिश्तेदारों के थाने पहुंचने पर उसने आरोपियों के खिलाफ बयान दिया। कोर्ट ने यह भी देखा कि वह कई स्थानों पर आरोपियों के साथ गई, कई मौकों पर संपर्क का

अवसर मिला, लेकिन तत्काल किसी से शिकायत नहीं की। उसने आशु राठौर से फोन पर बातचीत की, लेकिन अपने माता-पिता से संपर्क नहीं किया। अदालत ने एटीएम कार्ड की बरामदगी को भी महत्वपूर्ण माना। कार्ड पीड़िता के पिता से जब्त हुआ था, न कि पीड़िता से। इसके अलावा पुलिस रिकॉर्ड में उसके घर से जाने की तारीख को लेकर भी विरोधाभास सामने आया। मेडिकल परीक्षण में डॉक्टर को शरीर पर बाहरी या आंतरिक चोट नहीं मिली। हाईकोर्ट ने इन परिस्थितियों को पीड़िता की गवाही में मौजूद अन्य विरोधाभासों के साथ देखा। हाईकोर्ट ने संतोष प्रसाद और वीपिन एड दा रेड. लाला/मामलों में सुप्रीम कोर्ट के सिद्धांतों (न्याय दृश्यन्त) का उल्लेख करते हुए कहा कि केवल पीड़िता की गवाही के आधार पर दोषसिद्धि संभव है।

कोरबा। कोरबा के विशेष सत्र न्यायालय (पाँक्सो) ने नाबालिग से यौन अपराध के एक मामले में आरोपी सौतेले पिता धर्मेन्द्र कुमार साहू उर्फ धन्नु को 30 वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। न्यायालय ने आरोपी पर कुल 1,500 रुपए का अर्थदंड भी लगाया है। विशेष सत्र प्रकरण (पाँक्सो) क्रमांक 49/2025 में यह फैसला 12 अगस्त 2026 को अपर सत्र न्यायाधीश (एफटीसी) कोरबा की अदालत ने सुनाया। मामला मानिकपुर पुलिस सहायता केंद्र (थाना कोतवाली कोरबा) के अपराध क्रमांक 567/2025 से संबंधित है। पीड़िता के वास्तविक पिता से उसकी माँ करीब 3 वर्ष पूर्व से अलग होकर सौतेले पिता आरोपी के साथ पति-पत्नी के रूप में रहती है। पीड़िता के जन्म के कुछ वर्ष बाद से ही माँ ने उसे उसके नाना-नानी के पास छोड़ दिया था। तब से पीड़िता अपने नाना-नानी के घर में ही पली बड़ी है। पीड़िता की माँ और उसकी छोटी बहन कोरबा में रहते हैं, जिन्हें गर्मी की छुट्टी में नानी के घर में उसकी माँ छोड़ी थी। जुलाई 2025 में स्कूल खुलने से पीड़िता की माँ अपनी दोनों बेटियों को कोरबा से लेने आयी थीं। तब पीड़िता बोली कि वह भी

किया सम्मानित – शासकीय कार्यों एवं दायित्वों का उत्कृष्ट निर्वहन करने वाले विभिन्न विभागों के 50 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को केंद्रीय राज्यमंत्री श्री तोखन साहू द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। **परेड में महिला प्लाटूनों का शानदार प्रदर्शन** – परेड प्रतियोगिता के सीनियर वर्ग में जिला पुलिस बल महिला ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि नगर सेना महिला ने द्वितीय स्थान हासिल किया। जूनियर वर्ग में एनसीसी जूनियर डिवीजन बिलासपुर ने प्रथम, एनसीसी सीनियर गर्ल्स ने द्वितीय तथा एनसीसी सीनियर बॉयज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। **देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने बांधा समां** – स्वतंत्रता दिवस समारोह में विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। सांस्कृतिक कार्यक्रम में महारानी लक्ष्मीबाई कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला ने प्रथम, एलसीआईटी बोदरी ने द्वितीय तथा दिल्ली पब्लिक स्कूल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सौतेला पिता बना हैवान:अकेली पाकर बेटी से किया दुष्कर्म,आरोपी गिरफ्तार

कोरबा। कोरबा के विशेष सत्र न्यायालय (पाँक्सो) ने नाबालिग से यौन अपराध के एक मामले में आरोपी सौतेले पिता धर्मेन्द्र कुमार साहू उर्फ धन्नु को 30 वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। न्यायालय ने आरोपी पर कुल 1,500 रुपए का अर्थदंड भी लगाया है। विशेष सत्र प्रकरण (पाँक्सो) क्रमांक 49/2025 में यह फैसला 12 अगस्त 2026 को अपर सत्र न्यायाधीश (एफटीसी) कोरबा की अदालत ने सुनाया। मामला मानिकपुर पुलिस सहायता केंद्र (थाना कोतवाली कोरबा) के अपराध क्रमांक 567/2025 से संबंधित है। पीड़िता के वास्तविक पिता से उसकी माँ करीब 3 वर्ष पूर्व से अलग होकर सौतेले पिता आरोपी के साथ पति-पत्नी के रूप में रहती है। पीड़िता के जन्म के कुछ वर्ष बाद से ही माँ ने उसे उसके नाना-नानी के पास छोड़ दिया था। तब से पीड़िता अपने नाना-नानी के घर में ही पली बड़ी है। पीड़िता की माँ और उसकी छोटी बहन कोरबा में रहते हैं, जिन्हें गर्मी की छुट्टी में नानी के घर में उसकी माँ छोड़ी थी। जुलाई 2025 में स्कूल खुलने से पीड़िता की माँ अपनी दोनों बेटियों को कोरबा से लेने आयी थीं। तब पीड़िता बोली कि वह भी

अपनी माँ के साथ में कोरबा घूमने के लिये जायेगी, तब 19 जुलाई 2025 को पीड़िता अपनी माँ व दोनों बहनों के साथ कोरबा आयी। इससे पहले पीड़िता कोरबा कभी नहीं आयी थी और पीड़िता ने आरोपी को पहली बार देखा था। पीड़िता और उसकी बहन किराये के मकान में अपनी मां के साथ रह रहे थे। माँ रोज सुबह 9 बजे रोजी- मजदूरी करने जाती थी व आरोपी मिस्त्री का काम करता था और रोज 10 बजे काम पर जाता था।घटना दिनांक 02 अगस्त 2025 को भी माँ काम पर गयी थी व बहन लोग स्कूल गये थे। आरोपी धर्मेन्द्र साहू घर पर ही था। उसने सुबह 11 बजे के लगभग जबरन गलत काम किया। चिछाने पर पीड़िता के मुँह पर कपड़ा रख दिया था। उसने धमकाया कि अगर यह बात को किसी को बतायी तो जान से मार दूँगा। पीड़िता डर के कारण किसी को नहीं बतायी। बाद में जानकारी अपनी माँ को दी। तत्पश्चात चैकी मानिकपुर में रिपोर्ट दर्ज कराई। धारा 65 (1), 351 (3) बीएनएस एवं 04 पाँक्सो एक्ट के तहत पुलिस ने एफ्भाईआर दर्ज कर प्रकरण विवेचना में लिया। आरोपी धर्मेन्द्र कुमार साहू को गिरफ्तार कर जेल भेजा दिया गया है ।

यूपीएल ने पेश किया है एक क्रांतिकारी और स्मार्ट खरपतवार प्रबंधन समाधान राईसबॉक्स

रायपुर। फसल सुरक्षा और खेती व्यापार के क्षेत्र में दुनिया भर में अपना नाम कमाने वाली कंपनी, यूपीएल सस्टेनेबल एग्री सोल्यूशंस ने भारतीय बाजार में एक क्रांतिकारी कदम उठाया है। कंपनी ने आधुनिक धान की खेती को ध्यान में रखते हुए अपना नया और उन्नत खरपतवार नाशक ‘राईसबॉक्स’ बाजार में लाने की घोषणा की है। यह नया उत्पाद यूपीएल की मजबूत शोध क्षमता और किसानों को अत्याधुनिक तकनीकी समाधान देने की प्रतिबद्धता का एक बेहतरीन उदाहरण है। इस खास शुभारंभ के अवसर पर शाकनाशी विभाग के प्रमुख बिस्वजीत बोराह ने ‘राईसबॉक्स’ को एक स्मार्ट और आधुनिक समाधान बताया। उन्होंने कहा कि यूपीएल की बेहतरीन अनुसंधान क्षमता और उन्नत तकनीक के दम पर विकसित किया गया यह उत्पाद धान की खेती करने वाले किसानों के लिए खरपतवार प्रबंधन को बेहद आसान और सुरक्षित बना देगा। उनका मानना है कि यह नया नवीनीकरण न सिर्फखरपतवारों पर सटीक और असरदार नियंत्रण रखेगा, बल्कि किसानों को बिना किसी चिंता के फसलों की सुरक्षा और बेहतर पैदावार हासिल करने में भी पूरी मदद करेगा।उन्होंने आगे कहा कि यूपीएल हमेशा अनुसंधान और उन्नत तकनीक में निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध है ताकि किसानों की हर बदलती ज़रूरत को समय पर पूरा किया जा सके। इसी कड़ी में बाजार में लाया गया ‘राईसबॉक्स’ उत्पाद धान उत्पादकों के लिए बेहद फायदेमंद साबित होने वाला है। किसानों की सुविधा के लिए यह नया समाधान यूपीएल के मजबूत वितरण समूह के माध्यम से छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल,

आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु जैसे देश के प्रमुख धान उत्पादक राज्यों में बिक्की के लिए उपलब्ध करा दिया गया है। धान की खेती में आज के समय में किसानों को अनियमित बारिश और मजदूरों की कमी के कारण खरपतवार नियंत्रण में बहुत बड़ी दिक्कों का सामना करना पड़ रहा है। लगातार बढ़ती मजदूरी के चलते किसान अब फसलों के उगने के बाद छिड़के जाने वाले शाकनाशकों पर ज्यादा निर्भर हो रहे हैं। इस वजह से कई बार सही नतीजे पाने के लिए उन्हें अलग-अलग दवाओं को एक साथ मिलाना पड़ता है, बार-बार स्प्रे करना पड़ता है या फिर ज़रूरत से ज्यादा मात्रा में दवाओं का इस्तेमाल करना पड़ता है। इसके साथ ही, इन्फेक्टोक्लोआ कस्मगल्ली (सांवा घास) और साइपरस इरिया और डिफ़ॉर्मिस (मोथा प्रजाति) जैसे जिंदी खरपतवार लगातार फैल रहे हैं, जिन पर काबू पाना अब बेहद मुश्किल होता जा रहा है। आज के बदलते दौर में किसानों के सामने कई नई चुनौतियाँ आ खड़ी हुई हैं, जिसके कारण खरपतवार को ज्यादा असरदार तरीके से नियंत्रण में लाने वाले आधुनिक समाधानों की माँग लगातार बढ़ रही है। हमारे किसान भाई अब एक ऐसे ऑल-इन-वन समाधान की तलाश में हैं जो घास, सेज और चौड़ी पत्ती वाले सभी खरपतवारों को एक ही बार में पूरी तरह खत्म कर सके। वे एक ऐसा सुरक्षित और भरोसेमंद विकल्प चाहते हैं जो उनकी मुख्य फसल को बिना कोई नुकसान पहुँचाए इस्तेमाल करने में बेहद आसान हो, फसल की पैदावार बढ़ाए और खेतों में उनके काम के बोझ को कम करके लगातार शानदार नतीजे दे।

आरोपी लंबे समय तक विदेश में रहा था। उसका नाम ड्रग्स से जुड़े कई मामलों में सामने आ चुका है। अभियोजन के मुताबिक, ऐसी आशंका है कि बसोया ड्रग्स तस्करी का एक बड़े रैकेट में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। अभियोजन पक्ष ने कहा कि नशीले पदार्थों की सप्लाई एक गंभीर अपराध है। एनसीबी और पुलिस के विभिन्न अपरेशनों के दौरान करीब 9,000 किलोग्राम मेफेड्रोन जब्त किया गया था। पुणे पुलिस ने विश्रवांतावाड़ी (पुणे) और दिल्ली में चलाए गए अभियानों के दौरान भी भारी मात्रा में ड्रग्स बरामद की थी। अभियोजन पक्ष ने बताया कि इस मामले में कई आरोपी हैं और बसोया से बाकी आरोपियों की भूमिका के बारे में पूछाछ की जानी है। मामले में अन्य आरोपियों की तलाश भी जारी है। इसी आधार पर अभियोजन ने अदालत से बसोया की छह दिन की एनसीबी कस्टडी मांगी।

यजल जैसी बुनियादी सुविधाओं को लेकर भी चिंता जताई।

एबीवीपी ने आरोप लगाया, 'प्रदर्शन के दौरान एनएसयूआई के सदस्यों ने बहस और अभद्र भाषा का इस्तेमाल कर गतिपूर्ण प्रदर्शन को बाधित करने की कोशिश की।' पुलिस ने रिवकार की कारवाया कि झड़प में सात छात्र घायल हुए हैं। इनमें एनएसयूआई के चार और एबीवीपी के तीन छात्र शामिल हैं।

एनएसयूआई के चार छात्रों को सिर में 'गंधी' चोटें आई और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया।

का गुबार छा गया। दूसरी तरफ रोस्तोव क्षेत्र भी ढहल उड़ा। गर्वनर यूरी स्ल्यूसर ने बताया कि रोस्तोव के तीन शहरों पर 150 से ज्यादा ड्रोंनों ने धावा बोला। यहां हमले में पांच लोगों की मौत हो गई। कई रिहायशी मकान, एक रेलवे स्टेशन और आपसपास के जंगल आग की लपटों में घिर गए। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेन्स्की ने बताया कि रूस ने भी मिसाइलों और ड्रोंनों से हमला किया। क़्रिवी रिह शहर में रूसी मिसाइल गिरने से दो लोगों की मौत हो गई और 14 लोग घायल हो गए। सूरी शहर में एक व्यक्ति की जान चली गई। राजधानी कीव में कई जगह आग लग गई, जिसमें छह लोग झुलस गए। जेलेन्स्की ने कहा कि रूस बैलिस्टिक मिसाइलों से नागरिक ठिकानों को जानबूझकर निशाना बना रहा है।

ढाका। बांग्लादेश ने रविवार को कहा कि वह चाहता है कि भारत प्रधानमंत्री तारिक रहमान की संभावित नई दिल्ली यात्रा के लिए अनुकूल माहौल बनाए। प्रथम आलो की रिपोर्ट के अनुसार, बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता शाहिदुल करीम ने इसके लिए भारतीय अधिकारियों से द्विपक्षीय प्रत्यर्पण संंधि के तहत पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना और अन्य फरार अपराधियों को जल्द वापस करने के साथ उम्माना हादी की हत्या के आरोपियों को बांग्लादेश को सौंपने का अनुरोध किया है। यह बयान 12-13 सितंबर को होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के लिए तारिक रहमान की नई दिल्ली यात्रा को लेकर बनी अनिश्चितता के बीच आया है। तारिक रहमान ने पिछले सप्ताह भारत के उच्चायुक्त दिनेश त्रिवेदी से मुलाकात की थी और पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के बांग्लादेश प्रत्यर्पण की मांग की थी। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं था कि वह नई दिल्ली की यात्रा करेंगे या नहीं। बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता शाहिदुल करीम ने कहा, 'हमने इस मामले पर अपना रुख स्पष्ट कर दिया है। हमारा मानना है कि इस यात्रा के लिए उचित माहौल बनाना जाना चाहिए। हम उनके (भारत के) जवाब का इंतजार कर रहे हैं। बांग्लादेश और भारत पिछले कई हफ्तों से प्रधानमंत्री तारिक रहमान की भारत की द्विपक्षीय यात्रा की संभावना को लेकर एक-दूसरे के संपर्क में हैं।' नई दिल्ली में 5 अगस्त को हसीना की ओर से मीडिया को ऑनलाइन संबोधित किए जाने के बाद भारत और बांग्लादेश के संबंधों में तनाव देखने को मिला है। शेख हसीना ने कहा था कि वह लोकतंत्र बहाल कर देश को 'सही रास्ते' पर लाने के लिए दिशंबर में स्वदेश लौटने को लेकर दृढ़ हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि उन्हें जेल या मौत की सजा का सामना करने का खतरा हो सकता है। बांग्लादेश ने इस मीडिया बातचीत पर नाराजगी जताई थी। उसने कहा था कि इस कार्यक्रम से उसके लोगों की भावनाएं आहत हुई हैं और इससे भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर बनाने के प्रयासों पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। हालांकि, भारत के विदेश मंत्रालय ने 7 अगस्त को कहा था कि हसीना से जुड़े इस मीडिया कार्यक्रम में भारत की कोई भूमिका नहीं थी और मंच पर बांग्लादेश सरकार को लेकर कही गई किसी भी बात का वह समर्थन नहीं करता।

